उत्तर—भारत में विभिन्न सामाजिक समस्याओं में बेरोजगारी या बेकारी की समस्या सबसे विकराल तथा भयंकर समस्या है। यह समस्या केवल भारत में ही नहीं अपितु अन्य अविकसित एवं विकासशील देशों में आज भी एक गम्भीर समस्या बनी हुई है। बेरोजगारी की समस्या पर विचार करने से पूर्व यह आवश्यक है कि बेकारी के अर्थ पर प्रकाश डाला जाए।

बेरोजगारी का अर्थ एवं परिभाषाएँ

(Meaning and Definitions of Unemployment)

बेरोजगारी या बेकारी व्यक्ति की उस अवस्था का नाम है जबकि वह काम तो करना चाहता है तथा काम करने के योग्य भी है, परन्तु उसे काम नहीं मिलता। इस प्रकार बेरोजगारी एक विवशता या बाध्यकारी निष्क्रियता की अवस्था है। हम भिखारियों या साधुओं को बेरोजगार नहीं कहेंगे क्योंकि वे इच्छा से ही कुछ नहीं करना चाहते। हमारे देश में अनेक व्यक्ति, जो पूर्णतया स्वस्थ हैं, कार्य करने की इच्छा भी रखते हैं परन्तु उन्हें काम नहीं मिलता, वास्तव में बेकार और बेरोजगार हैं।

बेरोजगारी के सामान्य अर्थ को जान लेने के बाद उसकी एक व्यवस्थित परिभाषा प्रस्तुत करनी भी अनिवार्य है। मुख्य परिभाषाएँ निम्नलिखित हैं—

(1) **फेयरचाइल्ड** (Fairchild) के अनुसार—"बेरोजगारी का तात्पर्य एक सामान्य क्रियाशील वर्ग को एक सामान्य अवधि में सामान्य मजदूरी की दर से और सामान्य परिस्थितियों में किसी आर्थिक क्रिया से अनिश्चित रूप से पृथक् कर देना है।"[1]

---

1. "Unemployment is forced and involuntary separation from remunerative work or the part of the normal working force during normal working time, at normal wages and under normal conditions."
—*Fairchild*

Scanned with CamScanner

(2) सार्जेण्ट फ्लोरेन्स (Sargent Florence) के अनुसार—"बेरोजगारी उन व्यक्तियों की निष्क्रियता से परिभाषित की जा सकती है जो कार्य करने के योग्य तथा इच्छुक हैं।"[1]

(3) कार्ल प्रिब्राम (Karl Pribram) के अनुसार—"बेरोजगारी श्रम बाजार की वह दशा है जिसमें श्रम-शक्ति की पूर्ति, कार्य करने के स्थान की संख्या से अधिक होती है।"[2]

बेरोजगारी की उपर्युक्त परिभाषाओं से यह स्पष्ट हो जाता है कि बेकार केवल उसी व्यक्ति को कहते हैं जो कि काम करना चाहता है तथा काम करने की क्षमता भी रखता है परन्तु उसे काम नहीं मिल पाता। इसी सन्दर्भ में पीगू (Pigou) ने उचित ही लिखा है, "बेरोजगार केवल वह व्यक्ति होता है जो काम पाने की इच्छा रखता है परन्तु फिर भी काम न मिलने के कारण वह बेरोजगार है।"

बेरोजगारी के प्रमुख रूप
(Major Forms of Unemployment)

बेरोजगारी अनेक प्रकार की होती है। इसके प्रमुख रूप निम्नलिखित हैं—

(1) मौसमी बेरोजगारी—कुछ व्यवसाय और कार्य ऐसे होते हैं जो किसी विशेष मौसम में चलते हैं। उस विशेष मौसम में व्यक्तियों को रोजगार मिल जाता है और मौसम के समाप्त होते ही व्यक्ति बेकार हो जाता है। उदाहरण के लिए—कुछ मजदूर फसल कटाई के समय तो रोजगार प्राप्त कर लेते हैं परन्तु उसके पश्चात् वे बेरोजगार हो जाते हैं।

(2) चक्रीय बेरोजगारी—चक्रीय बेरोजगारी का अर्थ तेजी-मन्दी के चक्र के कारण होने वाली बेकारी है। जब तेजी के बाद मन्दी आती है, वस्तुओं के दाम गिरने लगते हैं तो माल की निकासी न होने से इसे तैयार करने में मुनाफा कम होने या घाटा होने से मिल मालिक अपने कारखानों को बन्द करने लगते हैं और इनमें काम करने वाले मजदूर या कर्मचारी बेरोजगार हो जाते हैं।

(3) यान्त्रिक बेरोजगारी—आज के युग में मनुष्य का स्थान मशीनें ले रही हैं जिस कारण अनेक व्यक्ति बेकार हो जाते हैं। तकनीकी प्रशिक्षण प्राप्त व्यक्तियों की संख्या इतनी बढ़ गई है कि प्रत्येक को काम नहीं मिल पाता।

(4) प्रच्छन्न बेरोजगारी—इस बेरोजगारी में व्यक्ति थोड़े समय के लिए बेकार होता है। उदाहरण के लिए—कोई व्यक्ति 8 घण्टे के लिए काम करना चाहता है परन्तु उसे काम केवल इतना मिलता है कि वह उसे 5 घण्टे में पूरा कर लेता है और उसके शेष 3 घण्टे व्यर्थ जाते हैं। यद्यपि ऐसे व्यक्ति को हम बेकार नहीं कह सकते परन्तु वह अल्प समय के लिए अवश्य बेकार हो जाता है।

भारत में बेरोजगारी के प्रमुख कारण
(Major Causes of Unemployment in India)

बेरोजगारी कोई भगवान का दिया हुआ अभिशाप नहीं है अपितु बेरोजगारी के कारण भी समाज में ही विद्यमान होते हैं। भारत में बेकारी के प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं—

(1) वैयक्तिक अयोग्यता—जो व्यक्ति शारीरिक और मानसिक दृष्टि से अयोग्य होते हैं उन्हें नौकरी प्राप्त करने में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है तथा प्राय: असफलता ही हाथ लगती है। एक व्यक्ति जो लँगड़ा, लूला या अन्धा है, वह नौकरी करने में असमर्थ रहता है।

---

1. "Unemployment may be defined as the idleness of persons able and willing to work."
—*Sargent Florence*

2. "Unemployment is a condition for a labour market in which the supply for labour power is greater than the number of available openings."
—*Karl Pribram*

Scanned with CamScanner

हमारे देश में अधिकांश लँगड़े-लूले भीख माँगने के लिए विवश हो जाते हैं क्योंकि उन्हें कोई भी अपने यहाँ काम देने को तैयार नहीं होता है। इसी प्रकार जिन व्यक्तियों का मानसिक सन्तुलन ठीक नहीं होता वे भी बेकारी के शिकार होते हैं।

(2) जनसंख्या में वृद्धि—हमारे देश की जनसंख्या में तीव्रता के साथ वृद्धि हो रही है। जनसंख्या में वृद्धि के अनुपात में रोजगार की सुविधाओं में वृद्धि नहीं हो रही है। ऐसी दशा में बेकारी का फैलना स्वाभाविक ही है। कृषि व्यवस्था के यन्त्रीकरण के कारण कृषक मजदूर नौकरी की खोज में नगरों में आने लगते हैं परन्तु यहाँ पर भी उनको रोजगार नहीं मिलता। कृषि उत्पादन भी जनसंख्या वृद्धि के अनुरूप नहीं है।

(3) अनियोजित औद्योगीकरण—हमारे देश में पिछले वर्षों में तीव्रता के साथ औद्योगीकरण हुआ है। अनियोजित औद्योगीकरण के फलस्वरूप मनुष्य का स्थान मशीनों ने ले लिया है। जिस कार्य को हाथ से करने में अनेक श्रमिक लगते हैं उसी कार्य को मशीनों द्वारा एक या दो श्रमिकों द्वारा किया जाने लगा है। इस प्रकार मशीनों द्वारा कार्य करने से श्रमिकों की कम आवश्यकता पड़ने लगी, जिसका परिणाम बेकारी या बेरोजगारी हुआ।

(4) आर्थिक मन्दी—जब तक माँग के अनुसार पूर्ति चलती रहती है तब तक श्रमिक भी रोजगार पर लगे रहते हैं परन्तु जब माँग और पूर्ति में असामंजस्य आ जाता है तब श्रमिकों में बेरोजगारी बढ़ती जाती है। औद्योगीकरण के परिणामस्वरूप वस्तुओं का उत्पादन जब तीव्रता से और अधिक मात्रा में होने लग जाता है तो माँग में कमी आ जाती है जिससे मिल मालिकों को हानि होने लगती है। ऐसी दशा में वे मिलों या कारखानों में से छँटनी करके (श्रमिकों की संख्या घटाकर) उत्पादन घटाने लगते हैं अथवा मिलों को अल्प या दीर्घकाल के लिए बन्द कर देते हैं। फलस्वरूप हजारों मजदूर बेकार हो जाते हैं। इस प्रकार आर्थिक मन्दी बेरोजगारी का एक कारण होता है।

(5) दोषपूर्ण शिक्षा प्रणाली—हमारे देश की शिक्षा प्रणाली केवल सैद्धान्तिक और पुस्तकीय है। वह छात्रों को व्यावहारिक जीवन के लिए प्रशिक्षित नहीं करती। शिक्षा काल में छात्रों को किसी भी प्रकार न तो हस्तशिल्प सिखाया जाता है और न किसी उद्योग से सम्बन्धित शिक्षा प्रदान की जाती है। शारीरिक श्रम से बचने में वे गौरव समझते हैं, अत: शिक्षा समाप्त करने के पश्चात् वे केवल किसी दफ्तर में ही काम करना चाहते हैं और शारीरिक श्रम द्वारा धनोपार्जन करने में अपना अपमान समझते हैं। परन्तु दफ्तरों में सभी पढ़े-लिखे नवयुवक को रोजगार मिलना प्राय: असम्भव-सा है। इसके अतिरिक्त क्योंकि शिक्षा विधि में किसी प्रकार का व्यावसायिक प्रशिक्षण नहीं दिया गया है इसलिए नौकरी न मिलने पर व्यक्ति अपना कोई व्यवसाय भी नहीं खोल सकता।

(6) प्राकृतिक साधनों का अपूर्ण उपयोग—हमारे देश में प्राकृतिक साधनों का प्रचुर भण्डार है परन्तु तकनीकी क्षेत्र में पिछड़ा होने के कारण अभी तक इनका उपयोग भली प्रकार नहीं किया गया है जिसके प्ररिणामस्वरूप लाखों हेक्टर भूमि अनछुई पड़ी है।

(7) कुटीर उद्योगों का पतन—आज देश के प्राचीन कुटीर उद्योग धनाभाव व अनियोजित औद्योगीकरण के कारण समाप्त हो गए हैं। इससे अनेक शिल्पकार और कारीगर बेकार हो गए हैं।

(8) श्रमिकों में गतिशीलता का अभाव—प्राय: भारतीय मजदूर अपने निवास स्थान या जहाँ वे एक बार काम कर चुके हैं उस स्थान को छोड़कर दूसरी जगह जाना पसन्द नहीं करते। इस प्रवृत्ति के कारण किसी स्थान पर मजदूरों की संख्या बहुत अधिक बढ़ जाती है, जिसका परिणाम होता है बेरोजगारी। यदि मजदूरों में गतिशीलता की प्रवृत्ति हो तो वे एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाकर काम में लग सकते हैं।

Scanned with CamScanner

(9) पर्याप्त पूँजी का अभाव—पूँजी की कमी के कारण नवीन उद्योगों की स्थापना नहीं हो पाती। आजकल महँगाई इतनी है कि प्रत्येक उद्योग की स्थापना के लिए पर्याप्त धन की आवश्यकता होती है. परन्तु लोग बढ़ते मूल्यों के कारण बचत नहीं कर पाते।

(10) कृषि का मानसूनों पर निर्भर रहना— भारतीय कृषि मानसूनों पर निर्भर रहती है। जिस वर्ष वर्षा नहीं होती उस वर्ष कम भूमि में फसल बोई जाती है। परिणामस्वरूप हजारों कृषि श्रमिक बेकार हो जाते हैं ।

(11) भूमि का अनुचित विभाजन—देश में अधिकांश कृषि योग्य भूमि कुछ इने-गिने व्यक्तियों के हाथ में है। उत्तर प्रदेश में प्रति हजार किसानों में 161 किसानों के पास भूमि है। ऐसी दशा में बेरोजगारी का फैलना स्वाभाविक ही है।

(12) श्रमिकों और मालिकों के मध्य संघर्ष—आजकल बोनस तथा उचित वेतन की माँग को लेकर प्राय: श्रमिकों और मिल मालिकों के मध्य संघर्ष होते रहते हैं, आए दिन हड़ताल तथा तालाबन्दी होती रहती है। ऐसी दशा में भी श्रमिक बेकार हो जाते हैं।

बेरोजगारी दूर करने के उपाय

(Measures for Eradicating Unemployment)

लगभग सभी देशों में बेरोजगारी एक प्रमुख समस्या है। लॉर्ड बैवरीज (Lord Bevridge) के अनुसार, "बेरोजगारी का सबसे बड़ा दोष भौतिक न होकर नैतिक है। बिना बेरोजगारी नष्ट किए देश की प्रगति नहीं हो सकती।" इसीलिए सभी समाज बेरोजगारी को दूर करने का प्रयास करते हैं। भारत में बेरोजगारी पर नियन्त्रण पाने के प्रमुख उपाय निम्नलिखित हैं—

(1) जनसंख्या नियन्त्रण—बेरोजगारी से मुक्त होने के लिए जनसंख्या वृद्धि को रोकना परम आवश्यक है। इस समय भारत की जनसंख्या लगभग एक करोड़ व्यक्ति प्रति वर्ष की दर से बढ़ रही है। ऐसी दशा में जनसंख्या पर नियन्त्रण रखना परम आवश्यक है। यदि इसी गति से जनसंख्या बढ़ती रही तो देश में बेकारी की समस्या का कोई हल नहीं निकल सकता। इस स्थिति में बेकारी से मुक्त होने के लिए परिवारों को सीमित रखना तथा जनसंख्या की वृद्धि को रोकना अति आवश्यक है।

(2) रोजगार कार्यालयों की स्थापना—बेरोजगारी को दूर करने में रोजगार कार्यालयों का विशेष हाथ रहा है। उनके द्वारा ही श्रमिकों की माँग और पूर्ति के मध्य सन्तुलन बना रहता है। रोजगार कार्यालयों में प्रत्येक बेकार व्यक्ति अपनी आयु, नाम, पता व अपनी रुचि के व्यवसाय को दर्ज करा देता है। दूसरी ओर, मिल मालिक रोजगार कार्यालय में श्रमिकों की आवश्यकता की सूचना देते रहते हैं। रोजगार कार्यालय अधिकारी (Employment Officer) रिक्त स्थानों की सूचना बेरोजगार व्यक्ति को दे देते हैं और मालिक से सम्पर्क करा देते हैं। इससे क्षेत्रीय बेरोजगारी प्राय: कम होती है।

(3) पर्याप्त माँग के स्तर को बनाए रखना—समस्त श्रमिकों को काम में लगाये रखने के लिए आवश्यक है कि माँग के स्तर को ऊँचा बनाए रखा जाए। माँग घटने पर उत्पादन में कमी आती है और उत्पादन में कमी आने से बेरोजगारी बढ़ती है। इसके लिए यह भी अनिवार्य है कि उद्योग इत्यादि उन्हीं क्षेत्रों में अधिकतर खोले जाएँ जिनमें उत्पादित वस्तुओं की खपत शीघ्रता से देश में ही हो जाए।

(4) नियोजित औद्योगीकरण—अनियोजित औद्योगीकरण मन्दी और बेरोजगारी को जन्म देता है। प्राय: पूँजीवादी व्यवस्था में प्रत्येक पूँजीपति उस उद्योग में ही पूँजी लगाते हैं जिसमें उन्हें

Scanned with CamScanner

अधिक लाभ होने की सम्भावना होती है। कभी-कभी एक ही उद्योग में अनेक पूँजीपति अधिक लाभ होने की सम्भावना से पूँजी लगा देते हैं। परिणामस्वरूप उत्पादन अधिक बढ़ जाता है, फलतः मिल-मालिकों को मिलें बन्द करनी पड़ती हैं। अतः बेरोजगारी स्वाभाविक रूप से फैलने लगती है। ऐसी दशा में यह आवश्यक है कि औद्योगीकरण नियोजित होना चाहिए।

(5) श्रमिकों की गतिशीलता को प्रोत्साहन—प्रचार साधनों के द्वारा श्रमिकों के स्वभाव को गतिशील बनाया जाना चाहिए। मिल मालिकों का कर्त्तव्य है कि श्रमिकों के रहने के लिए उत्तम आवास की व्यवस्था करें। ऐसा करने से वे दूसरे स्थानों पर सरलता से आ-जा सकेंगे।

(6) शिक्षा में सुधार—शिक्षा को व्यावसायिक बनाया जाए। छात्रों को हाथ के काम का अभ्यास कराया जाए ताकि शिक्षा के पश्चात् यदि नौकरी नहीं मिलती तो छात्र स्वयं अपना कोई काम कर सकें।

(7) उद्योग-धन्धों व नए कार्यों का विस्तार—बेरोजगारी को दूर करने के लिए नए उद्योग-धन्धों का विकास करना अनिवार्य है जिससे बेरोजगारी कुछ सीमा तक दूर की जा सके। नवीन उद्योगों के विकास से रोजगार मिलता है और बेकारी की समस्या हल हो जाती है। देश में पंचवर्षीय योजनाओं के अन्तर्गत सिंचाई, रेल यातायात, खानों-कारखानों, उद्योग-धन्धों, शिक्षा आदि कार्यों का विस्तार किया जा रहा है और ऐसा अनुमान किया जाता है कि आठवीं योजना के अन्त में इनसे 80 लाख व्यक्तियों को काम मिला है।

(8) कृषि क्षेत्र में सुधार—पढ़े-लिखे लोगों को खेती करने के लिए उत्साहित किया जाए। दूसरे, कृषि योग्य नवीन भूमि का विस्तार किया जाए। कृषि के यन्त्रीकरण को प्रोत्साहन देना चाहिए तथा ऐसी मान्यताओं को समाप्त किया जाना चाहिए जो उच्च जातियों के कृषि करने में बाधक हैं।

(9) सामाजिक सेवाओं का विस्तार—देश में विभिन्न सामाजिक सेवाओं का विस्तार होना चाहिए, क्योंकि इन सेवाओं को पूरा करने में भी श्रमिकों और युवकों की आवश्यकता होगी जिससे कि पर्याप्त सीमा तक रोजगार के अवसर उपलब्ध होंगे तथा बेरोजगारी दूर हो सकेगी।

(10) सामाजिक दृष्टिकोण में परिवर्तन—हमारे देश में सामाजिक मान्यताएँ पुरानी तथा दोषपूर्ण हैं। उच्च वर्ण के लोग तथाकथित छोटा कार्य करने में अपमान समझते हैं। वे हाथ का कोई छोटा कार्य करने की अपेक्षा खाली बैठे रहना अधिक उचित समझते हैं। अतः जनसाधारण के दृष्टिकोण में भी परिवर्तन करना आवश्यक है।

(11) कम समय की पालियाँ—यदि कम समय की पालियाँ कर दी जाएँ तो बेरोजगारी की समस्या पर्याप्त समय तक हल हो सकती है। 8-8 घण्टे की तीन पालियों के स्थान पर यदि समय कम करके 6-6 घण्टे की चार पालियाँ कर दी जाएँ तो अनेक श्रमिकों को कार्य मिल सकता है।

(12) सहकारी बैंकों की स्थापना—निर्धन व्यक्ति लघु उद्योगों की स्थापना कर सकें, इसके लिए सरकार को सहकारी बैंकों की स्थापना करनी चाहिए। इन बैंकों द्वारा लोगों को बहुत कम ब्याज पर रुपया उधार दिया जाए।

(13) रूढ़िवादिता की समाप्ति—हमारे देश में रूढ़िवादिता का भी बोलबाला है। गरीब अपनी गरीबी एवं बेकारी को भगवान का दिया हुआ अभिशाप मान लेता है जिसे दूर नहीं किया जा सकता। वह उसे दूर करने के लिए अधिक प्रयास भी नहीं करता। इस प्रकार के अन्धविश्वासों की समाप्ति भी व्यक्ति को आत्मनिर्भरता की ओर ले जाने में सहायक है।

Scanned with CamScanner